भीड़ का आदमी

(कविता संग्रह)

डॉ. के. के. श्रीवास्तव

BHEED KA AADMI

Copyright © : Dr. K.K. Shrivastava
Publishing Rights ℗ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-01-7
FIRST EDITION, JANUARY 2022, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING

A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH) (IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

पुरोवाक्

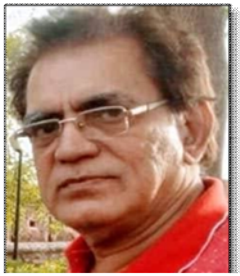

काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्य (कविता) की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं-

साहित्य रस से ओतप्रोत वाक्य को काव्य कहा गया है।

''वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।।''

सौंदर्यबोध को प्रतिपादित करते शब्दों को भी काव्य कहा गया है-

''रमणीयार्थप्रतिपादक: शब्द: काव्यम् ।।''

अलंकार चंद्रिका और काव्य चंद्रिका में *"प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालने वाली रचना"* को काव्य कहा गया है। कवियों ने तो काव्य के लिए इतना भी कह दिया है कि *"कविता मनुष्य बनाती है।"* *यह* सत्य भी है, क्योंकि, हम जन्म से जिन दृश्यों, जिन भाषाओं, जिन संस्कारों का अनुसरण, अनुकरण करते आये हैं, वह किसी न किसी रूप में कविता का ही स्वरूप है। शिशु बिना व्याकरण बोध के धीरे-धीरे सम्प्रेषण की विधा में निपुण हो जाता है, वह कविता ही तो है। शब्द, भाव, चेष्टा, वाक्य से हम अपनी बात कह सकें, समझा सकें, उसे काव्य मनीषियों ने काव्य (कविता) कहा है। बस, यहीं से सर्वप्रथम अतुकांत काव्य का शुभारंभ हुआ। आरंभ में यह संस्कृत में पल्लवित और पोषित हुई, फिर इसे अनुशासन में ढाला गया और काव्य की अनेक छंद-स्वच्छंद विधाओं का जन्म हुआ। काव्य की विधा में जो निष्णात नहीं, जिनका पाला कभी काव्य से नहीं पड़ा, वे भी सरस काव्य की श्रेणी में बातें करते दिखाई देते हैं। उनकी बातचीत में हम लोकोक्ति, मुहावरों, कहावतों का प्रयोग, उच्च श्रेणी के लोकरंजन वक्ता के रूप में पाते हैं। मैं यह कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं कि जीवन कविता से आरंभ होता है और उसका अंत भी कविता के रूप में ही होता । यह सिद्ध और ध्रुवसत्य ही है कि कविता मनुष्य बनाती है।

इसी भावभूमि को लेकर मुझे चिकित्सक के रूप में कठोर जीवन व्यतीत करने वाले डॉ. के. के. श्रीवास्तव जी की अनमोल पांडुलिपि पढ़ने का सुअवसर मिला। उसमें छिपे जीवन दर्शन एवं काव्य के अनेक रसों का रसास्वादन कर मैं भावविभोर हो गया और उसे अलग-अलग स्वरूपों में सजा कर प्रस्तुत करने की तक मिली। गद्य और पद्य में स्वच्छंद रचना करने वाले एक मनीषी के रूप में जैसे अब तक वे मौन साधना में तल्लीन थे। उनके रचना संसार में झाँकने का मौका मिला, तो अनेक रसोपलों को सुप्त पड़ी सीपियों से निकालना आवश्यक समझा। उनके आत्मज डॉ. दीपक श्रीवास्तव जी ने एक यज्ञ करने की ठानी। वे तो अपने पिता को एक अनमोल भेंट देने के लिए लंबे समय से लालायित थे। ये यज्ञ संपन्न कर उन्हें असीम संतोष मिलेगा।

अपने चिकित्सकीय सेवाकाल के दौरान श्री "कौशल" आम आदमी से ही अधिक रूबरू हुए होंगे, तभी तो उनकी लेखनी ने सबसे पहले *"आम आदमी'"* की ही बात कही और उनका सम्पूर्ण काव्य संसार उन्हें उस भीड़ से आज तक नहीं निकाल पाया। वे सेवानिवृत्त अवश्य हो गये, किन्तु उनके दर्द, उनकी ग़रीबी, उनके भविष्य की चिंताओं में ही उलझे रहे और उनकी मन मंजूषा में समेकित भावों ने *"भीड़ का आदमी"* की रचना कर डाली। कुछ बानगियाँ देखें-

मैं भी धरा की भीड़ का इक आदमी हूँ,
भले ही मैं बड़ा नहीं पर आदमी हूँ।
भले ही किसी व्यवधान में हो योगदान
संधान और अनुसंधान में है आदमी
निरीक्षण परीक्षण करे स्वयं आदमी
मैं इंसान हूँ या आदमी हूँ।

जीवन के गूढ़ रहस्य को सरल शब्दों में बयान करता उनका जीवन दर्शन देखें –

दिया जो था हमने ज़िंदगी को,

वह आज अपने ही हाथ में हैं।
उदय हुआ था जो कल सूरज,
वह आज देखें तो साथ में हैं।

अदम्य शक्ति के रूप में भगवान् के प्रति आस्था और श्रद्धा का चित्रण कितने सुंदर शब्दों में किया है, सोचा हो उन्होंने कि शायद अब तो आदमी बदल जाये-

बस इंसान समझ जाए कि
हम जो करते हैं वो सब
भगवान को दिखाई देता है।

जनता जनार्दन के स्वरूप को उनके शब्दों में देखिए-

लक्ष्मी चंचला है
सोने नहीं देती
मखमली बिस्तरों पर
नींद नहीं रहती।
अवाम कभी
नींद की गोली नहीं लेती

उनकी विद्वत्ता की ऊँचाई उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना *"ग्लोबलाइजेशन"* में देखी जा सकती है। परिवार, नई पीढ़ी और पाश्चात्य संस्कारों से अपने मन की व्यथा को उन्होंने बहुत ही सुंदर ढंग से परिलक्षित किया है-

जो हाथ नमन को और
मुँह अभिवादन के लिए होते थे
उन हाथों में अब मोबाइल, मुँह पर शब्दगन है
भले ही बाहर हम भारतीय हैं पर
अंदर तो पाश्चात्य मन है।

बालमन को आकर्षित करते दृश्यों को भी उन्होंने अपनी कविताओं में सम्मिलित किया है। पर्यावरण के लिए वृक्षों के महत्व पर उनकी लेखनी-

नहीं रहेंगे वृक्ष कठिन होगा सावन का आना
कहाँ करेंगे नृत्य मोर, गायेगा कोयल गाना

पंतग से बच्चों की उमंग का दृश्य देखें-

कभी सड़क पर दौड़ लगाना,
लेने डोर पतंग
जीवन है संघर्ष,
उड़ना लिए उमंग
आसमान में उड़ी पतंग।

पाठशालाओं में बालसभाओं की कमी पर भी कवि ने चिंता व्यक्त कर पक्षी के रूप में अपनी भावनाओं को लेखनी से उनके कोमल मन की कल्पना की है। वे बचपन को बचाने के लिए कितने आतुर हैं, *''आया एक विचार''* के माध्यम से एक चिंतन देखें-

हम अपने पंखों से करते पर्यावरण नीरोग
पेड़ फसल से कीट पतंगे खा करते हैं योग
नहीं चलेगी सृष्टि हमारी बिन आपस सहयोग
कान खोल कर मानव सुन ले सुन ले या सरकार
आत्ममनन कर हमको दे दो जीने का अधिकार
आया एक विचार.....

बहुत विस्तृत केनवास है उनके शब्द संसार का, जिसमें काव्य के अनेक रस घुले मिले हैं। उसे आम भाषा में पिरोकर उन्होंने अपने रचना संसार को खुला आसमान दिया है। उनकी रचनाओं में जीवन का हर दृश्य उपलब्ध है, एक-एक रचना पाठक को भीतर तक उद्वेलित करती है।

उनका साहित्यिक अवदान भी उनके व्यक्तित्व की तरह लंबे समय तक याद रखा जाएगा, ऐसी शुभाकांक्षा। उनकी यह कृति उनके परिवार के लिए प्रेरणास्पद और साहित्य जगत् के लिए समय का दस्तावेज़ है।

अंत में उनके कृतित्व को इन शब्दों से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ-

जीवन के विभिन्न आयामों का
वातायन है यह पुस्तक।
छंद-स्वच्छंद छटाओं का
रंगायन है यह पुस्तक।
"भीड़ का आदमी"
यात्रा है आम आदमी की,
फ़लक को छूता इंद्रधनुषीय
रूपायन है यह पुस्तक।

डॉ. गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'
वरिष्ठ साहित्यकार, छंदकार एवं कवि
'सान्निध्य' 817, महावीर नगर
कोटा (राजस्थान)- 324005
चलभाष- 7728824817

□ □

आत्मकथ्य

होश सम्हालने के बाद से मेरा जीवन धैर्य और साहस के परीक्षण का काल रहा। 1973 से 1982 तक चिकित्सक के रूप में राजस्थान के जिला सवाई माधोपुर सीमेंट प्लांट के फलौदी स्थित क्वारी ब्रांच में मेरी प्रथम नियुक्ति हुई। 10 वर्ष तक सतत सेवा करने पर जब जीवन में स्थायित्व आने लगता है, तब ही वह ब्रांच बंद हो गई और मैं सैंकड़ों आम आदमी की भाँति सड़क पर आ गया था। मैं घबराया नहीं। तब ही मैंने जाना कि हम कर्ता न हो कर भगवान पर आश्रित हो कर कर्म करें, फल अवश्य मिलेगा। आदमी कर्म करने में स्वतंत्र है, फल पाने में नहीं। मैंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और पिछले अनुभव को लेकर निजी चिकित्सक के रूप में करौली जिले के सपोटरा नगर में स्थाई रूप से निवास करते हुए पिछले चालीस वर्ष से आज तक निर्लिप्त भाव से सेवाएँ दे रहा हूँ।

सन् 1950 में पूर्वांचल परिक्षेत्र के जिला फतेहपुर तहसील बिन्दगी के ग्राम भारतपुर में एक सम्भ्रान्त शिक्षित कायस्थ परिवार में मेरा जन्म हुआ। मेरे पिता डॉ. नवरतन लालजी एक कुशल और जाने-माने होम्योपैथी चिकित्सक थे। मेरी परवरिश भरे-पूरे परिवार में अच्छी तरह से हुई और मेरे अग्रज, जो पशुधन एवं दुग्धशाला में अधिकारी थे, उनके साथ ग्रामीण शालाओं से उत्तरप्रदेश के कई नगरों यथा इलाहाबाद, लखनऊ आदि में रह कर, शिक्षा-दीक्षा ग्रहण कर मैं सन् 1972 में एक होम्योपैथी चिकित्सक बन कर तैयार हुआ।

शिक्षित और संस्कारवान् परिवार के सान्निध्य में रह कर मेरा हिंदी भाषा साहित्य से बड़ा लगाव रहा। आज प्राथमिक शालाओं में बालसभाएँ कम ही होती हैं, जबकि बालसभाओं में भाग लेने के

फलस्वरूप कविता, कहानी अंताक्षरी आदि के पठन पाठन के कारण ही मुझे कुछ लिखने की प्रेरणा हुई और तब से आज तक मैं अपने अनुभवों को किसी न किसी रूप में लिख कर संग्रहीत करता रहा हूँ, जिसका पुस्तक के रूप में आज आप अवलोकन कर रहे हैं, वह उन्हीं संस्कारों की परिणति है-

मैंने जो देखा, जो सुना
उसके अनुरूप ही मैंने
अपने आप को गढ़ा और गुना
गुरुजनों एवं माता-पिता के
आशीर्वाद से ही मैं
सेवार्थ एक चिकित्सक बना
मैंने अर्थ के फेरे में न पड़ कर
जीवन को अनर्थ नहीं किया अपितु
"सर्वेभवन्तु सुखिन:" का मार्ग चुना।

जीवन में अधिकतर आम आदमी से ज्यादा रूबरू हुआ। रोगियों, असाध्यों, पीड़ितों और आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों की चिकित्सा से मैंने उनकी दुनिया को नेत्रों से नहीं अपने अंतर्मन से देखा है। यही कारण है कि मेरी चिकित्सा से जो भी आज स्वस्थ हैं, उनके चेहरे पर खुशी देख कर मुझे संतोष मिलता है। मेरे प्रति उनकी मनोभावना से मिले श्रेय को ही मैं जीवन-धन मानता रहा हूँ। मेरे परिवार के फलने-फूलने, उच्च स्तर पर उनके स्थापित होने में, उन असहायों की शुभकामनाओं का योग है।

ईश्वर की सचेतात्मक शक्ति ने सदा मेरा मार्गदर्शन किया, परिवार में वृद्धजनों से सहानुभूति एवं समानुभूति को समझा और जाना। कभी भी लोभ को लाभ का बाना नहीं पहनाया। मेरे विचार से धनोपार्जन, जीवन-यापन व गृहस्थी की सुचारु व्यवस्था तक ही होना चाहिए । शेष लोकोपयोगी और परमार्थ में खर्च होना चाहिए। धन मैंने गृहस्थ भाव से कमाया और संत भाव से खर्च किया।

परिवार के सभी सदस्यों पत्नी, पुत्र, पुत्रियों सभी से मुझे भरपूर सहयोग और प्रोत्साहन मिला। ईश्वर की महती कृपा रही। मुझे

एक अन्नपूर्णा पत्नी, अच्छे ओहदों पर स्थापित रत्न सरीखे तीन पुत्र, सुशील एवं सुघड़ गृहिणी के रूप में पत्नी, और कुलवल्लभा मणि सरीखी एक पुत्री ने मेरे जीवन को खुशियों से भर दिया। वे अधिकारों के साथ-साथ उत्तरदायित्वों का भी समान रूप से ध्यान रखते हैं। मैंने जीवन में संघर्षो को सफलता की कुंजी माना, यही कारण है आज मैं पौत्र-पौत्रियों से सम्पन्न भरे-पूरे परिवार के साथ सर्वानन्द में हूँ। इससे बढ़ कर और क्या खुशी है कि मेरी संतति मेरा अनुकरण कर रही हैं।

साहित्य जगत् को मैं विहंगम दृष्टि से जो देखता, सुनता, पढ़ता रहा हूँ, और तब लगता था कि मैं अभी अपरिपक्व हूँ, इसलिए सदैव चिंतन मनन में लगा रहा और आत्माभिमुखी ही रहा हूँ। मेरे अंतस् की पीड़ाओं, मेरी भावनाओं को आप तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

परिवार, समाज, राजनीति, सरकार में आसीन लोग आदमी ही तो हैं, फिर मानव मूल्य कम क्यों हो रहे हैं? मानव समाज का मूल्यांकन क्यों घट रहा है? पशु-पक्षी ने अपनी धरा बदली परंतु अपनी उड़ान नहीं बदली, अपनी जीवन शैली नहीं बदली, पर आदमी क्यों इतना बदल गया? इन्हीं कुछ यक्ष प्रश्नों को लेकर अपने विचार, शब्दों के माध्यम से कविता रूप में आप तक पहुँचाने के लिए अब उम्र के इस पड़ाव पर पहुँचा हूँ। अब भी यदि इस यज्ञकर्म का उद्यापन नहीं कर पाया तो कदाचित्, यह यज्ञ पूर्ण न हो। मेरे जीवन में यह पूर्णाहुति का समय है, ताकि मेरा यह यज्ञ सम्पन्न और कार्यसिद्ध हो-

मुसीबतों ने भी कभी
मेरे दर पर दस्तक दी थी
घबराया नहीं, ईश्वर ने
उनसे बचने की व्यवस्था की थी
कौनसा तूफ़ान है जो
कभी आकर गया न हो
इसी अंदाज़ में गुजर-बसर
मैंने इस उम्र तक की थी।

लेखनी को विश्राम देने से पूर्व मैं आभारी हूँ भोपाल के प्रभात साहित्य परिषद् के कर्ता-धर्ता श्री नन्द जी 'नन्द' का, जिनके मार्गदर्शन से मेरी दो कविताएँ,, कविता संग्रह *'मनस्वी'* में प्रकाशित हुई। साथ ही डॉ. गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल' जी का हृदय से आभारी हूँ। उनकी महानता है कि वे साहित्य क्षेत्र के आसमान पर हैं, परंतु हम जैसों पर भी वे दृष्टि व लगाव रखते हैं। मेरी भावनाओं के सागर मंथन से उन्होंने रचनाओं को *"भीड़ का आदमी"* के रूप में प्रस्तुत कर मुझे अनुग्रहीत किया है।

कुलदीपक का आभार मानने को भी मन करता है, जिसने मुझे पुस्तक के रूप में एक अप्रतिम सौग़ात देने का मानस बनाया और 'आकुल' जी के साथ मिल कर इसे मूर्तरूप दिया।

पुत्र! जीवेत शरद: शतम्!

किमधिकम्,

डॉ. के. के. कौशल

होम्यो फिजीशियन

☐ ☐

अभिमत

जीवन है तो संघर्ष है

प्रातस्स्मरणीय पिताश्री की छत्र-छाया में सदैव सुरक्षित अनुभव करते हुए, मेरा सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हुआ है। उन्हीं के प्रदत्त संस्कारों की देन है, हम कर्तव्यों की चौखट पर खड़े आज भी उनकी एक मुस्कान के लिए समर्पित हैं। यह आत्मश्लाघा नहीं, निर्लिप्त, निस्वार्थ भाव से मेरे उद्गार हैं, जो मन में हैं , वही बाहर हैं।

हमने उनके संघर्षों को देखा है, अनुभव किया है और एक वटवृक्ष की भाँति डटे रहने का उनमें हौसला भी देखा है। यदि वे अडिग नहीं रहते तो हम सब बिखर जाते। यह उनको मिले पूर्वजों के संस्कारों का फल है और वही फल हमें भी उनसे मिला है, जिसके लिए हम कभी उऋण नहीं हो पाएँगे।

मेरे जीवन में कई क्षण ऐसे आए, जिसमें निर्णय लेने का साहस डगमगाने लगता था, किन्तु उनके वरदहस्त ने मुझे हर बार समाधान के रास्ते सुझाए और मैं सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया। आज भी जो निर्णय मुझसे होते हैं, वे उन्हीं का आशीर्वाद मानता हूँ।

संघर्ष के दिनों में मैं अक्सर अपने पिताजी की क्लिनिक पर उनके पास बैठ जाया करता था। हम दोनों में बात तो कम होती थी, लेकिन पिताजी की नम आँखें सब कुछ बयाँ कर देती थीं। वे हर परिस्थिति मे संयम न खोने की सीख देते रहते थे। वे कहते थे कि भगवान पर भरोसा होना चाहिये।

बात उन दिनों की है जब मैंने राजकीय महाविद्यालय करौली से बी.एससी. जीव विज्ञान मे टॉप किया तो पिताजी ने कहा कि आपका एम.एससी. में दाखिला हो गया है, अब तुम एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) कर लो । चार भाई-बहिन में ज्येष्ठ होने के कारण एवं घर के बिगड़ते आर्थिक

हालात की वजह से कुछ न कुछ करने को जी चाहता था। बस, लगता था कि कोई भी नौकरी कर लूँ, ताकि घर के सभी सदस्यों का जीवन बसर होने लगे। लेकिन, पिताजी ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना हम कर लेंगे, आप एम.एससी. कीजिये । इस दाखिले की फीस जमा करने के लिये पिताजी ने घर के इकलौते पंखे को 300 रुपये मे गिरवी रख दिया और कहा कि 1 माह मे ब्याज सहित रकम जमा कर आपकी मूल रकम लौटाकर पंखा छुड़वा लेंगे। एक माह तक उनींदे और करवटें बदलते हुए अपने आपको अपराधी समझने लगा था । एक माह का वक्त भी गुज़र गया तथा वह पंखा भी हाथों से निकल गया, तो तय किया कि मैं अब अध्ययन नहीं नौकरी ही करुँगा और फिर माता- पिता के आशीर्वाद से *संतोकबा दुर्लभजी हास्पीटल कम रिसर्च सेंटर* मे बतौर लेब टेक्नीशियन चयन हो गया। अनुशासित एवं विनम्र रहने का हुनर मेरे माता-पिता ने ही हमें सिखाया था। जीवन मे हमेशा दूसरों का सम्मान करो और यदि कोई व्यक्ति नाराज़ हो जाए, तो उस समय तक मंथन करो कि ऐसी कौनसी ग़लती हमसे हो गयी, जो यह व्यक्ति नाराज़ हो गया है। इस वाक्य ने मुझे असीम शक्ति दी। इसी एक वाक्य पर अमल करते रहते, मैंने अब तक का जीवन गुजारा है। आगे की जिंदगी के लिए, उन्होंने दूसरा ब्रह्म वाक्य दे दिया, *"जीवन है तो संघर्ष है।"* मेरे लिए यह एक मार्गदर्शक वाक्य है।

पिताजी कहते हैं कि प्रेम बहुत आवश्यक है। प्रेम यदि न हो तो किसी भी कार्य में बाधा आ सकती है। आप में यदि लेखन के प्रति प्रेम न हो तो आप पत्रकार न बनें, एक अच्छे लेखक न बनें। इसलिये, जिस भी व्यवसाय मे आप हों, उससे आपको प्रेम होना चाहिए। यही कारण है कि बतौर पुस्तकालयाध्यक्ष मैंने पिताजी के आदर्श के तहत सार्वजनिक पुस्तकालय के क्षेत्र मे विश्व कीर्तिमान् स्थापित किए एवं मेरा नाम दुनिया के सबसे बड़े पुस्तकालय संगठन *"इफ्ला वॉल ऑफ फेम"* में दर्ज हुआ।

पिताजी कहते हैं कि कोई भी कार्य आप करो तो सबसे पहले उस कार्य मे अटूट आस्था तथा विश्वास होना चाहिए।

विपरीत परिस्थितियों मे धैर्य न खोने के लिये अक्सर पिताजी कहते रहते हैं। एक वक्त आया था जिसमें आपा खोने को जी चाहा। बात उन दिनों की है जब मुझे सरकारी सेवा में आये एक माह भी नही हुआ था कि मेरी इकलौती बहिन की शादी का जिम्मा मैंने सँभाला और जैसे ही बारात विदा हुई तो, टेंट वाले ने कहा कि या तो पूरा पैसा अभी दो नहीं तो तुम्हारे बड़े बेटे को मोटर साइकिल पर बाँध के ले जाऊँगा । हुआ भी ऐसा ही, पर धैर्य के साथ जैसे-तैसे मामला निपटाया। मेरा मानना है कि स्पष्टवादिता एवं धैर्य आपको अनुपम बनाता है ।

आपकी कुछ रचनाओं ने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी है-

संसार एक रंगमंच है
जीवन एक नाटक है,
आदमी एक संचालक है ,
नाटक मे लम्बाई का महत्व ,
पात्रों की अभिनय शैली का अस्तित्व,
वह कभी राजा है, कभी रंक है ,
आदमी के पात्र का अभिनय है सत्व ,
जैसा गढ़ा मुझे वही तो आदमी हूँ।

--00--

फटे पुराने वस्त्र
भले ही घर खाली है
मेहनतकश, मजदूर भले ही
पर, घर उनके खुशहाली है।

--00--

दुनिया से एक दिन तो हमें
रुख़सत होना ही है।
आज समय है, तो समझ नहीं,
जब समझ है, तो समय नहीं
इसका एक दिन तो हमें
अफ़सोस होना ही है।

पिताजी की पुस्तक मेरे लिये गीता समान है, जो पारिवारिक पृष्ठभूमि को एक सुदृढ आधार एवं मार्गदर्शन प्रदान करती रहेगी । ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्वस्थ रहें और उनका आशीर्वाद एवं सान्निध्य हमें यूँ ही मिलता रहे और आने वाली पीढ़ी भी उनके मार्गदर्शन में सफलता की ऊँचाइयाँ छुए।

पुस्तक की ही इन पंक्तियों के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ–

रूह से जुड़ते ही,
ज़िंदगी नेक हो जाती है
मज़हबों में बँटी भीड़,
एक हो ही जाती है
तू और है , मैं और हूँ
ये दूरियाँ मिटते ही,
नियति नेक हो जाती है।

डॉ. दीपक कुमार श्रीवास्तव
मण्डल पुस्तकालय अध्यक्ष
राजकीय सार्वजनिक मण्डल पुस्तकालय
कोटा राजस्थान

□ □

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	भीड़ का इक आदमी हूँ	1
2.	इंसानियत तो दिखएँ	4
3.	फटे-पुराने वस्त्र	5
4.	भूख	6
5.	नेता	7
6.	समझ सको तो	8
7.	घुटनों से तन ढक लेंगे	9
8.	रुखसत तो होना ही है	10
9.	दिया जो था हमने जिंदगी को	11
10.	सबल-निबल	12
11.	भगवान	13
12.	धरती का भगवान	13
13.	रूह से जुड़ते ही	14
14.	वहाँ नींद नहीं रहती	14
15.	वह घटिया आदमी है	15
16.	ग़रीबी	16
17.	शाम ढलते-ढलते	17
18.	बालक और भक्त	17
19.	धन	18
20.	परिमार्जन	18

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
21.	बीज	19
22.	जीवन की भव्यता	19
23.	सरकार	20
24.	पैसा-पावर	21
25.	शपथ आज हम खाएँ	22
26.	सपूत कपूत	22
27.	पिता पुत्र की धड़कन है	23
28.	यही प्यार ही तो है	24
29.	नारी	24
30.	महिमामंडन	25
31.	प्रेम	26
32.	सच मैंने दर्पण में देख लिया	27
33.	कथन	28
34.	कुछ मुक्तक	29
35.	माँ	31
36	माँ का नूर	31
37.	माँ की रहमत से	32
38.	कुछ दोहे	33
39.	ढूँढ़िए	34
40.	नौकरी से रिटायर्ड	34
41.	शिक्षा का अस्तित्व	35

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
42.	दिल के रिश्ते	36
43.	खून का रिश्ता	36
44.	तो हम ज़िंदा हैं	37
45.	राख मुर्दे की खँगालोगे	38
46.	संताप	39
47.	विचलित प्रकृति	40
48.	दुखड़ों पचड़ों में	41
49.	हमारी चाहत	41
50.	आज का बालक	42
51.	अपनी अपनी पसंद	43
52.	शोहरत	43
53.	ग्लोबलाइजेशन	44
54.	क्यों अपसेट हैं	45
55.	पलों का मोल होना चाहिए	46
56.	तेरा-मेरा	47
57.	स्व. सुभाष माथुर के प्रति अंतर्वेदना	47
58.	घर वृंदावन है	48
59.	बचपन की किलकारी	49
60.	जीवन का परिवर्तन देखा	50
61.	पत्थर बनाया है	51
62.	अंदर का आदमी सोता है	52

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
63.	खुद भी बदले	53
64.	वृक्षों से जीवन पलता है	54
65.	दस्तक दी थी	55
66.	आया एक विचार	56
67.	न हो धृष्टता	57
68.	आसमान में उड़ी पतंग	58
69.	अम्बर आगे भागेगा	59
70.	भारत देश बनाया	61
71.	पैदा करें	62
72.	मदिरा रानी	63
73.	अचेत	64
74.	दीवाल घड़ी	65
75.	समय	66
76.	कुछ ऐसा हो जाए	67
77.	शंखनाद करना है	68
78.	बंसी वाणी	69
79.	मेरी हस्ती तो गौण है	70
80.	ढलना सीखें	71
81.	थोड़ा-थोड़ा सबका हो लूँ	72
82.	भली पुस्तकें	73
83.	घर पर अगर अकेले हैं	74

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
84	कुम्हार का कमाल	75
85.	कागज़ की दुनिया	76
86.	झाड़ू	77
87.	मेरी बिटिया राज दुलारी	78
88.	इंसान बन कर देख	79
89.	क्या हम और लोग हैं	80
90.	क्षणिकाएँ	81